शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला –

जिसने दिखाई मेहमाननवाज़ी, सम्मान और

विश्वास

प्रश्न:

बाइबल में हम एक महिला के बारे में पढ़ते हैं जिसे “शूनेमी” कहा गया है। उसने भविष्यद्वक्ता एलीशा की बड़ी उदारता से सेवा की और उसे अपने घर में विश्राम करने के लिए स्थान दिया। लेकिन वास्तव में वह स्त्री कौन थी? और “शूनेमी” शब्द का क्या अर्थ है?

मुख्य पाठ:

2 राजा 4:12-13 (पवित्र बाइबिल: Hindi O.V.)

तब उसने अपने सेवक गहजी से कहा, “इस शूनेमी स्त्री को बुला।” जब उसने उसे बुलाया, तब वह उसके सामने खड़ी हुई। उसने उससे कहा, “इससे कहो, देख, तू हमारे लिये यह सब कष्ट उठा रही है;
मैं तेरे लिये क्या करूं?”

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

यहाँ से हमें समझ में आता है कि एलीशा इस स्त्री के अद्भुत आतिथ्य सत्कार का कितना सम्मान करता था। लेकिन क्या “शूनेमी” उसका नाम था? आइए इसे थोड़ा और गहराई से समझें।

उत्तर:

यदि हम 2 राजा 4 का पूरा संदर्भ देखें तो साफ़ होता है कि “शूनेमी” कोई व्यक्तिगत नाम नहीं, बल्कि उसकी भूमि या स्थान की पहचान है। इसका अर्थ है कि वह स्त्री प्राचीन इस्राएल के शूनेम नगर की रहने वाली थी।

2 राजा 4:8 (पवित्र बाइबिल: Hindi O.V.)

एक दिन एलीशा शूनेम गया, वहाँ एक धनी स्त्री रहती थी; उसने
उसे खाने के लिये बहुत आग्रह किया। सो जब कभी वह वहाँ से
जाता, तब वह उसके यहाँ जाकर भोजन कर लेता।

अर्थात “शूनेमी” का अर्थ है — शूनेम की रहने वाली स्त्री, जैसे आज कोई “तंज़ानियाई” कहलाता है। बाइबल के समय में इस प्रकार की पहचान बहुत सामान्य थी।

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

शूनेम कहाँ था?

शूनेम, इस्राएल के इस्साकार गोत्र के क्षेत्र में स्थित था। यह पुष्टि हमें यहोशू की पुस्तक में भी मिलती है:

यहोशू 19:17-18 (पवित्र बाइबिल: Hindi O.V.)

चौथा भाग इस्साकार के लिये, उनके घरानों के अनुसार निकला।
उनकी भूमि में ये नगर सम्मिलित थे: यिज्रेल, किसुल्लोत,
शूनेम…

यह जानकारी केवल भूगोल की दृष्टि से नहीं, बल्कि आत्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इस्राएल के गोत्र केवल किसी स्थान के निवासी नहीं थे, बल्कि परमेश्वर की वाचा में चुनी गई एक पवित्र प्रजा थे। शूनेमी स्त्री की कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि परमेश्वर अकसर गुमनाम स्थानों के विश्वासयोग्य लोगों के द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा करता है।

एक विलक्षण चरित्र की स्त्री

बाइबल में इस शूनेमी स्त्री को “धनी” या “महान स्त्री” कहा गया

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

है (इब्रानी भाषा में: אִּׁשָה גְּדוֹלָה / ईशा गेदोला)। इससे उसके संपत्तिधन-

और सामाजिक प्रतिष्ठा दोनों का संकेत मिलता है (2 राजा
4:8)। उसके कार्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि उसमें आत्मिक बुद्धि और उदारता थी। उसने एलीशा में परमेश्वर के दास को पहचाना और अपने घर में उसके रहने के लिए एक विशेष स्थान बनवाया (2 राजा 4:9-10)।

उसकी यह मेहमाननवाज़ी बाद में नए नियम में दिये गए इस आत्मिक सिद्धांत को पूरा करती है:

इब्रानियों 13:2 (पवित्र बाइबिल: Hindi O.V.)

परदेशियों के सत्कार करने से न चूको, क्योंकि इसी रीति से कितनों ने बिना जाने स्वर्गदूतों का सत्कार किया।

यद्यपि एलीशा कोई स्वर्गदूत नहीं था, फिर भी वह परमेश्वर का नबी और उसका सेवक था। उसकी देखभाल करना वास्तव में परमेश्वर के प्रति विश्वास और सेवा का कार्य था (देखिए मत्ती 10:41)।

बाइबल में एक और शूनेमी स्त्री

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

एक और प्रसिद्ध शूनेमी स्त्री है — अबिशाग, जिसने बुढ़ापे में राजा दाऊद की सेवा की:

1 राजा 1:3-4 (पवित्र बाइबिल: Hindi O.V.)

तब उन्होंने सारे इस्राएल देश में एक सुंदर कन्या की खोज की,
और शूनेम की अबिशाग नामक कन्या को पाया और राजा के पास ले
आए। वह कन्या बहुत सुंदर थी, और वह राजा की सेवा करती और उसकी देखभाल करती रही; परन्तु राजा ने उसे न पहचाना।

जैसे पहली शूनेमी स्त्री को एक विशेष और पवित्र जिम्मेदारी दी गई थी, उसी प्रकार अबिशाग के जीवन में भी परमेश्वर की योजना प्रकट होती है। इससे हमें फिर से दिखता है कि परमेश्वर शूनेम जैसे छोटे स्थानों से भी अपने उद्देश्यों के लिये लोगों को उठाता है।

आध्यात्मिक सिखावन

परमेश्वर छुपे हुए विश्वास को महत्व देता है। शूनेमी स्त्री कोई नबी, याजिका या रानी नहीं थी, फिर भी उसकी कहानी बाइबल में लिखी गई है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर के सेवकों के प्रति किया गया आतिथ्य, स्वयं परमेश्वर के लिये किया गया होता है (देखिए

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

मत्ती 25:40)।

परमेश्वर विश्वास और दया का प्रतिफल देता है। जब एलीशा ने उससे पूछा कि वह उसके लिए क्या कर सकता है, उसने कोई इनाम लेने से इनकार कर दिया। फिर भी परमेश्वर ने उसे एक पुत्र दिया (2 राजा 4:16), और जब वह मरा, तो एलीशा ने उसे जीवित कर दिया (2 राजा 4:35)। यह हमें सिखाता है कि हमारी भलाई के कार्य अनदेखी आशीषों का कारण बन सकते हैं।

साधारण लोग भी परमेश्वर की योजना में असाधारण भूमिका निभाते हैं। “शूनेमी” यह याद दिलाता है कि छोटे और अनजाने स्थानों के लोग भी परमेश्वर के हाथ में महान कार्यों के लिए उपयोग किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

शूनेमी स्त्री हमें सिखाती है कि विश्वासयोग्य आतिथ्य, आत्मिक विवेक और उदारता हमें परमेश्वर से विशेष आशीष की ओर ले जा सकते हैं। उसकी कहानी हमें चुनौती देती है कि हम भी परमेश्वर के कार्य को पहचाने और उसका आदर करें, चाहे वह किसी भी सामान्य व्यक्ति या स्थान के माध्यम से हो।

जैसे वह स्त्री अपने “शूनेम” में विश्वासयोग्य पाई गई, वैसे ही

शूनेम की स्त्री: एक आदर्श महिला – जिसने दिखाई
मेहमाननवाज़ी, सम्मान और विश्वास

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

हम भी वहाँ विश्वासयोग्य पाए जाएँ जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा है।

परमेश्वर आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp